P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12*August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ढूँढ़ाड़ का संघर्षरत जनजातीय लोकगायन

अनीता मीणा
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
जानकी देवी बजाज कला महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा

सारांश

जंगलों और पहाड़ी क्षेत्र तथा दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले निवासियों को आदिवासी समाज के रूप में जाना जाता है। जनजाति (tribe) वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था या जो अब भी राज्य के बाहर है। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवासियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक पद है। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति पद का प्रयोग हुआ है।

भारत में आदिवासियों का निवास जितना पुराना है उतनी ही पुरानी उनकी सभ्यता एवं संस्कृति रही है। यह आदिवासी परम्पराऐं पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तान्तरित होती रही है। इनके लोक गीतों में जीवन की सादगी, अनुभव की ताजगी और जातीय आत्माभिमान झलकता है।

मुख्य शब्द : ढूँढ़ाड़, कन्हैया, वाद्य यंत्र, समाज, जनजाति, गायन।

प्रस्तावना

भारत में राजस्थान पुरातन काल से ही विभिन्न कला और संस्कृतियों से समृद्ध रहा है। जिस प्रकार इन्द्रधनुष संसार के सभी रंगों को अपने में समाहित कर एक सौन्दर्य स्वरूप में हमें दिखाई देता है ठीक उसी प्रकार राजस्थान की विविध लोक कलाऐं इसके धरातल स्वरूप के साथ सांस्कृतिक सौन्दर्य को भी और अधिक सुन्दरता प्रदान करती है।

लोक कला मनुष्य के सभ्य समाज की प्रारम्भिक सीढ़ी है। 21वीं सदी भले ही कम्प्यूटर युग का रूप ले चुकी है परन्तु फिर भी लोक मानस में अपनी पुरातन संस्कृति कई रूपों में आज भी जीवित है।

राजस्थान के सन्दर्भ में भी यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे जाता है और इसी श्रृंखला में एक विशेष जनजातीय लोकगायन "कन्हैया" यहाँ के लोक मानस में आज भी सुरक्षित है यहाँ कई जनजातियाँ निवास करती हैं जो अपनी संस्कृति को सभ्य समाज के बीच संजोये रखने का प्रयास कर रही हैं।

प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली "मीणा" जनजाति "कन्हैया" लोक गायकी के संरक्षक के रूप में हमें दिखाई देती है। मीणा आदिवासी बहुल क्षेत्र पूर्वी राजस्थान में इस गायकी का प्रमुखतया गायन किया जाता है। लोक गायकों तथा पौराणिक जानकारों और लोक कथाओं के अनुसार इस गायकी का प्रारम्भ या उद्भव श्रीराम के सुपुत्रों लव तथा कुश के द्वारा किया गया।

"कन्हैया" एक भक्ति प्रधान गायकी है। पढ़े–लिखे नहीं होने के बावजूद धार्मिक ज्ञान को इस जनजाति के लोग इस लोक गायकी के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। यह एक समूहगान के रूप में गाया जाता है। यों तो क्षेत्र की सभी जातियाँ सुनती समझती हैं लेकिन इस पर पकड़ केवल मीणाओं की ही है।

"कन्हैया" को वर्तमान समय में राजस्थान के कुछ प्रमुख जिलों– सवाई माधोपुर, करौली, टोंक, दौसा, जयपुर, अलवर में ही गाया जाता है। इसके गायन को समूह द्वारा निम्न भागों में विभक्त किया जाता है–

भवानी

"कन्हैया" प्रारम्भ करने से पूर्व गायक इसके माध्यम से अपने ईष्ट देवों का स्मरण करते हैं और तत्पश्चात् अपना गायन आरम्भ करते हैं।

ठाढ़ी झड़ी

इसमें गायक दल हाथ पकड़ कर एक साथ खड़े होकर कथा को छोटे रूप में गाकर बताते हैं। इसके माध्यम से जो कथा गायी जाने वाली होती है उसका परिचय करवाया जाता है।

बैठक

ठाढ़ी–झड़ी की समाप्ति के बाद सम्पूर्ण दल नीचे बैठकर अपना नियत स्थान लेते हैं।

बोल

तत्पश्चात् दल दो भागों में विभक्त हो जाता है इन्हें (1) चाँदा और (2) भींत नामों से पुकारा जाता है।

चाँदा

आमने–सामने बैठते हैं।

भींत

एक सीधी पंक्ति में दीवार के समान बैठते हैं।

पद

इसको सम्पूर्ण दल एक साथ गाता है, मेड़ियों के द्वारा बोल बताकर दल को प्रारम्भ करने का संकेत दिया जाता है।

दुबेला

इसका गायन दोनों दल बारी–बारी से करते हैं। इसके गायन के समय एक प्रतियोगिता के समान प्रदर्शन होता है।

झोला

यहाँ गाने की राग/धुन परिवर्तित हो जाती है जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है कि झूले के समान धीरे और धीमी गति से इसे गाया जाता है।

झड़ी

अब अन्तिम भाग में दोनों दल (चाँदा और भींत) द्रुत लय में एक साथ इसे गाते है

कन्हैया के इन भागों को मिलाकर एक डट्टा बनता है फिर कथा के अनुसार डट्टे गाये जाते है।

पौराणिक कथा को प्रस्तुत करने के लिए सामान्यतः 5 से 8 पदों का प्रयोग किया जाता है। प्रमुखतया यह एक लय प्रधान गायकी है जिसमें तीनों लयों (1) विलम्बित लय (2) मध्य लय (3) द्रुत लय का सम्मिलित स्वरूप दिखाई देता है।

इसी क्रम में जब कन्हैया गायन होता है तो पूरे गाँव के लोगों में से 70–80 लोगों की टीम सम्मिलित होती है। जब गायन प्रारम्भ होता तो विपक्षी टीमों के लोग इनकी कथा के शब्दों को पकड़ने के लिए लालायित एवं ध्यानपूर्वक सुनते हैं। शब्दों का ऐसा तालमेल एवं सामंजस्य रहता हैं कि लोग कहते हैं कि मानों ये घटनाओं के घटित होने के समय स्वयं मौजूद रहे हों अर्थात् कथा में सजीवता का चित्रण किया जाता है।

उदाहरण के रूप में कन्हैया गायन की एक कथा इस प्रकार है– एक समय की बात हैं जब अर्जुनमोरा नामक स्थान पर गए और वहाँ पाण्डव अश्व वेदी यज्ञ कर रहे थे जिसके लिए एक घोड़े को दिग्विजय करने के लिए छोड़ रखा था। जब रतन कंवर जो कि मोरध्वज राजा के सुपुत्र थे ओर केवल पाँच वर्ष के थे, ने जब घोड़े को देखा तो उसे पकड़ लिया। रतन कंवर द्वारा अश्व वेदी यज्ञ के घोड़े को पकड़ने पर अर्जुन के घोड़े को पकड़ने के लिए मना किया तो रतन कंवर ने कहा कि जब तुमने दिग्विजय करने के लिए छोड़ा है तो मैं तो इसे पकडूंगा ही। बहस के पश्चात् रतन कंवर अर्जुन को ही बांध कर घोड़े को राज महलों में ले गए।

जब मोरध्वज राजा ने अर्जुन को देखा तो अपने पुत्र से कहा कि पुत्र ये तो अर्जुन है इसने तो महाभारत जीता है तुम इसे पकड़ कर क्यों ले आये? यह सुनकर रतन कंवर ने अर्जुन को सिंहासन पर बैठाया और पैर धोकर चरणामृत लिया तथा उसे छोड़ दिया। इसके उपरान्त अर्जुन के मन में ग्लानी थी और भगवान श्रीकृष्ण के पास जाकर कहते हैं कि भगवान आप तो कहते थे कि तेरे जैसा वीर और भक्त कोई नहीं हैं, परन्तु मुझे तो एक पाँच वर्ष का बालक ही बाँधकर ले गया। तब अर्जुन ने पूछा कि क्या वह मेरे से भी बड़ा भक्त है भगवान बोले हाँ अर्जुन को अपनी वीरता एवं सबसे बड़ा भक्त होने का भ्रम तोड़ने के लिए श्रीकृष्ण ने अर्जुन एवं स्वयं साधु का वेश धारण कर परीक्षा लेने जंगल में पहुँचे।

अर्जुन श्री किसन मन प्यारे
साधु बन गए पूरे सारे
काहू कै नहीं पड़े पहचाने
वन के केहर ले लिए लोरे।

अर्थात भगवान श्री कृष्ण और अर्जुन ने साधु का वेश धारण कर लिया और जब जंगलों में जा रहे थे तो वन का एक सिंह आ गया और भगवान श्रीकृष्ण एवं अर्जुन को खाने की बात कही तब अर्जुन ने कहा मुझे मत खाओं मैं तो भक्त हूँ तब सिंह बोला मैं तो भक्तों को ही खाता हूँ भगवान श्रीकृष्ण ने सिंह से कहा कि ये भक्त नहीं है भक्त तो मैं आपको बताऊँगा मेरे साथ चलो अब तीनों साथ–साथ आगे चल दिए।

भर्‌यौ कमोजन पाणी
जे में एक पक्षी बोले वाणी
अर्जुन राम–राम पक्षी से
संशय मिट गए कुन्ती के
ऐ रे भगत तेने मेरे देखे

आगे चलकर देखते हैं कि एक पक्षी जल के पास बैठा है और तीन युगों से प्यासा है और वह पानी तब पिये जब कोई राम–राम बोलता है। भगवान श्री कृष्ण ने उसे अर्जुन को बताया और कहा कि देखों मेरे भक्त कैसे हैं और आगे बढ़ जाते है।

जाय दरवाजे पै दे दिए डेरा
है गो प्रभात नगर में हेला
अरे .....वहाँ तो आए दरबार सुन महलन से
अब कैसे बोले तो मोरध्वज राजा
मांगों– मांगों मुख से मांगों
भोजन मेरे हाथन से पावौ
यहां ही कटवैदे चौमासो
अब कैसे कह रहे केहर वन के
दे दै तेरे रतन कंवर कू मौकू
ऐसे नहीं उत्तर दे दे मौकू
मांगे जे ही दंगों रे रे.....

अर्थात श्रीकृष्ण, अर्जुन और सिंह तीनों मोरा नामक स्थान पहुँचते हैं जहाँ मोरध्वज राजा के दरबार पर जाकर डेरा डाल देते हैं और इस बात की नगर में चर्चा होती है। दरवाजे पर पहुँचने की बात सुनकर मोरध्वज राजा दरवाजे पर ही आ जाते है और तीनों से पूछते हैं आपको क्या चाहिए? अपने मुँह से मांगों और मेरे हाथों का भोजन करो और यहीं रहो। ऐसे में वन का सिंह बोलता हैं कि आप अपने रतन कंवर को मुझे दे दो और नहीं तो मना कर दो। तब मोरध्वज राजा कहते हैं कि थोड़ा ठहरो तो सही आप जो भी माँगोगे वहीं दूंगा।

अरे मत चूकै बलम हमारे
अब कै आ गए धणी तुम्हारे
ऐसे कब केहर के कसर रह जाये तो
बलमा दे दे अंग तुम्हारे
ऐ ए मत करियो लोभ
पिया मेरे बिन से

राजा उन तीनों से कुछ देर प्रतीक्षा करने के लिए बोलते हैं और अपनी रानी पद्मावती को सारी कहानी बताते हैं तो रानी ने कहा कि आप विचलित ना हों और इस मौके को हाथ से नहीं, जाने दें क्योंकि ये सबके मालिक हैं। रानी कहती हैं कि रतन कंवर से भी सिंह भूखा रह जाए तो आप अपने अंग दे देना, उनसे किसी प्रकार का लोभ मत करना।

अरे ऐ..... नहीं लेगे तो नृत्य या ढब से
आदौ कर दे तेरे हाथन से
ऐ ..... दरवाजे पर है हइयै
अररर..... ख र र र ..... चले करौंती
धीरे– धीरे ढब से
सुत की नैक दया नहीं आवै
देखौ याकी कैसी ही छतिया
हाथई हाथन से हथ राड्यौ
तमासो देखे दुनिया

अब राजा और रानी रतन कंवर को लेकर दरवाजे पर पहुँच जाते हैं और उनके सामने प्रस्तुत करते हैं परन्तु श्रीकृष्ण ने कहा कि हम इस प्रकार से उसे ग्रहण नहीं करेंगे। इसके हिस्से करके दो तब राजा करौंती चला कर अपने बेटे के टुकड़े–टुकड़े करते हैं और सारी दुनिया देखती रह गई कि इनकी छाती कितनी कठोर है।

ऐ..... कर लियौ मैंने हाथ हरे में
रही मैं तो साबत बात कर से
देखूँगी तोय काऊ दिन बिगत पड़े पै।

अब रानी पद्मावती कहती हैं कि मैं अपनी बात पर रही और आपको आवश्यकता पड़ने पर देखूँगी। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन का भ्रम दूर कर दिया और मोरध्वज राजा एवं रानी पद्मावती की परीक्षा भी सफल रही।

अधिकांशतः इसमें लय संगत के लिए लोक वाद्य नौबत, घेरा आदि वाद्य यन्त्रों का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता है। एक विशेषता इस गायन की ये है कि वाद्य उपलब्ध हों या न हो परन्तु लय की तालबन्दी के लिए ये गायक हाथों से ताली बजाकर इसको गाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इस लोकगायकी का परिचय समाज से करवाना है। कई बार "कन्हैया" को इस जनजाति की अन्य गायकीयों के समान समझा जाता है इसके अन्तर को समझाने के प्रयास के साथ–साथ इसके असुरक्षित भविष्य के लिए भी समाज को जागरूक करने का प्रयास किया जाना है। राजस्थान में कई गायन शैलियाँ हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचानी जाती है उनमें इसे भी शामिल करने का प्रयास रहेगा।

साहित्यावलोकन

इस शोध कार्य के लिए लोक गायकों से सम्पर्क कर उनके साक्षात्कार के माध्यम तथा जनजाति में प्रचलित कथाओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। फिर भी यत्र–तत्र मिले पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से इसके सटीक होने के प्रमाण लिए गए है।

आदिवासी लोकगीत "कन्हैया" गायन के महानायक स्व0 श्री सालग्यराम मीणा की रचना (माध्यम श्री गोली मीणा की स्मृति के आधार पर) इस गायकी का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

डॉ. प्रसाद ने आदिवासी लोक संगीत की पृष्ठभूमि को साझा करते हुए इसके संरक्षण हेतु चिन्ता व्यक्त की है।

निष्कर्ष

अतः यह लोक गायकी आज अपने प्राचीन स्वरूप को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत है जिसे समाज के द्वारा ही संरक्षित करने के प्रयास करने होंगे। आज भी सभ्य समाज के साथ आगे बढ़ने की होड़ में जनजाति के लोग इस लोक संस्कृति को बचाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान नहीं दे पा रहे हैं जिसकी अत्यन्त आवश्यकता महसूस की जा रही है। क्योंकि जनजाति का एक बड़ा भाग आज भी इसके बारे में अधिक नहीं जानता। यह केवल कुछ ही क्षेत्रों में सीमित रह गई है जिसके कई कारण सामने आते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राजस्थान में आदिवासियों की स्थिति/ विकीपीडिया / इन्टरनेट।*
2. *मीणा, माया, 2014, "कन्हैया गायन के महानायक स्व0 श्री सालग्यराम मीणा की रचना", अरावली उद्घोष, जयपुर, आलेख पृ. सं. 12*
3. *मीणा, डॉ. केदार प्रसाद, 2012, जनसत्ता रविवारी समाचार पत्र, पृ. सं. 1–3*
4. *सवाई माधोपुर के क्षेत्रीय लोक गायकों के विभिन्न दलों के मेड़ीयाओं का साक्षात्कार।*